शिक्षा द्वारा बालक का समाजीकरण

बालक के समाजीकरण में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। परिवार के बाद शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा बालक का समाजीकरण सम्पन्न होता है। शिक्षा के दो महत्वपूर्ण साधन शिक्षक और विद्यालय समाजीकरण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

दुखीम के अनुसार, "शिक्षा नई पीढ़ी का नियम पूर्वक समाजीकरण करती है।" *("Education consists of methodical socialization of young generation" - **Durkhiem**.)* दुर्खीम ने नियम पूर्वक शब्द का प्रयोग विद्यालय के भीतर तथा बाहर होने वाले समाजीकरण के भेद को स्पष्ट करने के लिए किया है। वास्तव में नियम पूर्वक शब्द का प्रयोग उसने विद्यालय के अन्दर होने वाले समाजीकरण के लिए किया है। उसका मानना है कि विद्यालय के बाहर होने वाला बालक का समाजीकरण योजना विहीन और मनमाने ढंग से चलता है। शिक्षा के माध्यम से विद्यालय में दी जाने वाली शिक्षा योजनापूर्वक और संगठित ढंग से होती है। अतः विद्यालय में बालकों का समाजीकरण भी सुव्यवस्थित एवं योजनापूर्वक तरीके से होता है। विद्यालयों में समाजीकरण की प्रक्रिया के सुव्यवस्थित और नियमित होने के कई कारण होते हैं।

1. शिक्षक चूंकि समाज के बलते स्वरूप को भली भांति समझते हैं और उसके अनुसार ही बच्चे को शिक्षित करने का प्रयास करते हैं। अतः बच्चे का समाजीकरण भी उसी के अनुकूल होता है।

2. विद्यालय को चलाने वाली संस्थाओं के प्रबन्धक समय-समय पर शिक्षको के साथ सम्पर्क साध कर और अधिवेशन आदि बुला कर शिक्षा के स्तर को समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल बनाने का निरन्तर प्रयास करते रहते हैं। फलस्वरूप बालक का समाजीकरण भी नियमित ढंग से होता रहता हैं।

3. समायोजन समाजीकरण की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। विद्यालय में नियमित ढंग से ज्ञान की वृद्धि के साथ समायोजन की प्रवृत्ति को भी विकसित करने का प्रयास किया जाता है।

4. विद्यालयों में शिक्षण के लिए शिक्षण विधियां अपनायी जाती हैं। इन विधियों के माध्यम से बच्चे को शिक्षा प्रदान करके उनकी कार्यशीलता को बढ़ाने का प्रयास किया जाता है। नवीन शिक्षा पद्धतियों के द्वारा दी जाने वाली शिक्षा निश्चित ही बालक के समाजीकरण को सही दिशा प्रदान करती है।

5. नवीन शिक्षा पद्धति चूंकि वैज्ञानिक है और मनोवैज्ञानिक भी अत: इन पद्धतियों में बालक की आवश्यकता को ध्यान में रखकर शिक्षा की योजना को तैयार किया जाता है जिससे बालक के समाजीकरण को सही दिशा मिलती है।

6. परम्परागत शिक्षा में बालक को गौण माना जाता था और यह माना जाता था कि बालक शिक्षा के लिए है न कि शिक्षा बालक के लिए। लेकिन आज परिस्थितियां बदल चुकी हैं। अब विद्यालयों में शिक्षा देते समय बालक को ही शिक्षा का केन्द्र माना जाता है और उसी की रुचियों, अभिरुचियों आदि को ध्यान में रखते हुए शिक्षा देने की योजना बनाई जाती है। इससे बालक के समाजीकरणा में सहायता मिलती है।

समाजीकरण में शिक्षा के योगदान को स्पष्ट करने के लिए यहां समाजीकरण की दिशा में शिक्षक और विद्यालयों के कार्यो का उल्लेख करना नितान्त आवश्यक है क्योंकि यह दोनों ही शिक्षा के महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं इनके बिना शिक्षा द्वारा समाजीकरण की प्रक्रिया सम्पन्न नहीं हो सकती।

Sociology

महत्वपूर्ण लिंक

- Major Religion Of The World - Christianity, Islam, Hinduism, Buddhism
- What Is Cultural Diffusion | Types Of Diffusion | Barriers In Diffusion | Elements Of Cultural Diffusion | Stages Of Diffusion
- Cultural Hearths - Major cultural hearths of the world
- Social Environment: Issues And Challenges
- Major Languages Of The World- Definition, Features, Influences, Classification (World's Language Family)
- सामाजिक परिवर्तन और सांस्कृतिक परिवर्तन में क्या अंतर है?
- सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त (Theories of Social Change in hindi)
- सामाजिक परिवर्तन में बाधक तत्त्व क्या क्या है? (Factors Resisting Social Change in hindi)

- सामाजिक परिवर्तन के घटक कौन कौन से हैं? (Factors Affecting Social Change in hindi)
- सामाजिक गतिशीलता का अर्थ एवं परिभाषा, सामाजिक गतिशीलता के प्रकार, सामाजिक गतिशीलता के घटक
- सामाजिक स्तरीकरण का अर्थ एवं परिभाषा, सामाजिक स्तरीकरण के प्रकार
- संस्कृति की विशेषताएँ | संस्कृति की प्रकृति (Nature of Culture in Hindi | Characteristics of Culture in Hindi)
- दर्शन शिक्षक के लिये क्यों आवश्यक है | शिक्षा दर्शन का ज्ञान कक्षा में अध्यापक की किस प्रकार सहायता करता है
- शैक्षिक दर्शन का अर्थ एवं परिभाषा | दर्शन एवं शिक्षा के संबंध | दर्शन का शिक्षा पर प्रभाव
- शैक्षिक समाजशास्त्र का अर्थ | शैक्षिक समाजशास्त्र के उद्देश्य एवं क्षेत्र | शिक्षा के समाजशास्त्र की प्रकृति
- शैक्षिक समाजशास्त्र का महत्व स्पष्ट कीजिये | शैक्षिक समाजशास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता
- शिक्षा का समाजशास्त्र पर प्रभाव | शिक्षा समाजशास्त्र को कैसे प्रभावित करती है?
- नव सामाजिक व्यवस्था का अर्थ स्पष्ट कीजिए | नव सामाजिक व्यवस्था के प्रमुख अंगों का वर्णन कीजिए
- जेंडर का अर्थ | जेंडर पर संक्षिप्त लेख लिखिए | Meaning of gender in hindi | Write a short note on gender in hindi
- धर्म का अर्थ | धर्म की परिभाषाएं | धार्मिक शिक्षा के उद्देश्यों का वर्णन | धार्मिक शिक्षा की विधि
- धर्म निरपेक्षता के विकास में भारतीय विद्यालय की भूमिका | विद्यालयों में पंथोन्मुखी शिक्षा का स्थान
- धर्म निरपेक्ष राज्य की प्रमुख विशेषताएँ | भारत एक धर्म निरपेक्ष राज्य के रूप में
- भारत की जाति व्यवस्था | भारतीय जाति व्यवस्था पर संक्षिप्त लेख लिखिये
- धर्म निरपेक्षता के आवश्यक तत्व | भारत में धर्म निरपेक्षता की आवश्यकता एवं महत्व | धर्म निरपेक्षता व शिक्षा के उद्देश्य

sarkariguider.com